पाठ 4.2 : लोककथाएँ

संकलित

C74G95

आज भी वाचिक परंपरा में लोक साहित्य विद्यमान है। जिसे हम लोककथा, लोकगीत, लोकगाथा, कहावतें (हाना) मुहावरे, जनउला (पहेली) आदि के नाम से जानते हैं। ये लोक संपत्ति हैं। इनकी रचना किसने की यह अज्ञात है। लोक के इस ज्ञान को अब अनेक रचनाकारों द्वारा लिखा जा रहा है। इस पाठ में एक हल्बी और एक छत्तीसगढ़ी लोककथा दी जा रही है।

1. साँच ल आँच का (हल्बी लोककथा)

बहुत दिन पहिली के बात आय। एक झन किसान के बेटा हर एकेल्ला जंगल डहर जावत रहिस। सँगे–सँगवारी के बिना रद्दा कइसे रेंगे जाय, ये सोच के वोहर एकठन ठेंगा म तुमड़ी ल बाँध के जंगल के रद्दा रेंगे लागिस। रद्दा रेंगत–रेंगत ओला एकठन बड़का असन केकरा मिलिस। वोहर किसान के बेटा के सँगे–सँग कोरकिर–कोरकिर आए लागिस। तब किसान के बेटा हर ओला रद्दा ले दुरिहा मढ़ा के कहिस, ''तैं मोर सँग रेंगत–रेंगत कहाँ जाबे, इहिच्च करा रेहे राह, मोला अड़बड़ दुरिहा जाना हे, थक जाबे।'' ये कहि के वोहा अपन रद्दा रेंगे लागिस।

तब केकरा हर कहिस, भाई–ददा,
सँग म सँगवारी होही,
रद्दा थोकिन सरू होही।
मोला तैं सँग ले जाबे,
हरहिंछा तैं जिनगी पाबे।

केकरा के निक बात ल सुन के किसान के बेटा हर सोंचिस, चल आज इही ल सँगवारी मान लेथौं। अउ ओला तुमड़ी म धर के आगू डहर चल दिस।

कटकटाए जंगल। साँकुर रद्दा। काँटा–खूँटी ले बाँचत आगू रेंगे लागिस। रेंगत–रेंगत वो हर एकठन जंगल म पहुँच गिस, जिहाँ एकठन साँप अउ कउँवा के गजब दबदबा राहय, डर अउ तरास राहय। जउन ओ जंगल म जाय, वोहर कभू लहूट के नइ आय। साँप अउ कउँआ हर उनला मार के खा जाँय। उही पाय के ओ राज के राजा हर हाँका परवा दे रहिस,''जउन हर साँप अउ कउँआ ल मारही, वोकर सँग राजकुमारी के बिहाव कर दे जाही अउ ओला आधा राज के मालिक बना दे जाही।''

किसान के बेटा ल जब थकासी लागे लागिस, तब सोंचिस, रद्दा दुरिहा हे, चिटिक बिसराम कर ले जाय। ये सोंच के घमघमाए मउँहा के छइहाँ म सुरताये लागिस। सुग्घर हवा चलत रहिस। चिटिक बेरा म ओकर नींद परगे। उही मउँहा के रूख म साँप अउ कउँवा के बासा राहय। किसान के बेटा ल सुते देख के साँप हर अइस अउ ओला चाब दिस। साँप के चाबे ले तुरते वोकर मउत होगे। तब कउँवा हर रूख ले उतर के कहिस, ''तैं हर एकर पाँव ल चाबे हस, त पाँव डहर तोर अउ मूड़ डहर मोर।''

साँप अउ कउँवा के गोठ बात ल तुमड़ी म बइठे केकरा हर सुनत राहय। बेरा देख के धिरलगहा आइस अउ साँप के घेंच ल धर लिस अउ कहिस, ''तैं हर मोर सँगवारी ल जिया नहीं त तोरो परान नइ बाँचय।'' साँप छटपटाए लागिस, फेर वोकर छक्का–पंजा नइ चलिस। एला देख के कउँवा के टोंटा सुखाए लागिस। मउका देख के ठेंगा हर अइस अउ कउँवा ल ठठाये लागिस। कउँवा अधमरहा होगे। तब साँप अउ कउँवा हर किलोली करिन, ''हमला माफी दे दव सगा भाई, अब अइसन गलती कभू नइ करन।'' केकरा हर कहिस, ''जब परान संकट म हे, तब नत्ता–रिस्ता के सुरता आथे। माफी तभे मिलही जब हमर सँगवारी ल जियाबे। ''जब खुद के परान संकट म होथे, तब सब सरत मंजूर होथे। साँप तुरते किसान के बेटा के देह ले बिख ल तीर लिस।

साँप के बिख तीरे के बाद जब ओला होस अइस तब कहिस, ''अड़बड़ बेर ले सुत गेंव केकरा भाई, अब चलौ।'' केकरा हर सबो बात ल किसान के बेटा ल बताइस। किसान के बेटा हर कहिस, दुस्मन ल कइसे माफी केकरा भाई, ये कहि के साँप अउ कउँवा के मुड़ी ल काट के गमछा म गुरमेट के धर लिस।

ये सब ल उही लकठा म गाय चरावत धोरइ हर देखत रहिस। जइसे किसान के बेटा हर अपन रद्दा रेंगिस, धोरइ हर मरे साँप अउ कउँवा ल धर के राज–दरबार म पहुँच गे। राजा हर दरबार म बइठे राहय। राजा के आगू म जा के धोरइ हर कहिस, ''राजा साहब, मैं हर साँप अउ कउँवा ल मार डारेंव। ''ये कहिके मरे साँप अउ कउँवा के धड़ ल राजा के आगू म मढ़ा दिस।

धोरइ के बात ल सुन के राज–दरबार म उछाह के बादर छागे। आज अतियाचारी साँप अउ कउँवा ले मुक्ती मिलगे। राजा हर कहिस, ''हमर घोसना के पालन होना चाही। राजकुमारी के बिहाव धोरइ के सँग करे के तियारी करे जाय।'' राजा के हुकुम ले, चारों मुड़ा म राजकुमारी के बिहाव के तियारी होय लागिस। एक तो अतियाचारी साँप अउ कउँवा ले मुक्ती, दूसर तरफ राजकुमारी के बिहाव। ये खबर ह जंगल के आगी असन पूरा राज म बगरगे। परजा म दून खुसी छागे। राज भर म तिहार कस उछाह होगे। सबके मन म आनंद हमागे। चारों मुड़ा धोरइ के गुनगान होय लागिस। धोरइ खुस होगे। अब तो ओकर बिहाव राजकुमारी के सँग होही। अब वो राजा के दमाँद बन जाही। आधा राज के मालिक बन जाही। अब वोकर दुख के रात हर पहागे।

राज भर के छोटे–बड़े मनखे राजकुमारी के बिहाव म सामिल होए बर राज–दरबार पहुँचे लागिन। घूमत–घूमत किसान के बेटा घलो उही राज म पहुँचिस। राज म होवइया उछाह ल देख के वोहर दू–चार झन ल पूछिस, ये राज म अभी कउन तिहार मनावत हे भाई! सब झन एके बात कहिन, अतियाचारी साँप अउ कउँवा ल धोरइ हर मार डारिस। राजा साहब के घोसना के अधार म राजकुमारी के बिहाव धोरइ के सँग होए के तियारी हे।

ये बात ल सुन के किसान के बेटा अचरज म परगे। साँप अउ कउँवा ल तो मैं मारे हौं, ये धोरइ हर कइसे जान डारिस। वो हर कहिस, भाई, ''साँप अउ कउँवा ल तो मैं मारे हँव। धोरइ हर सच नइ कहत हे।''

ये बात हर ये कान ले वो कान होवत राज–दरबार म पहुँचगे। मंत्री हर राजा ल बताइस, एक झन परदेसी आए हे। वोहर कहिथे– ''साँप अउ कउँवा ल मैं मारे हौं।'' राजा कहिस– ''अइसे हे, त वो परदेसी ल राज–दरबार म हाजिर करे जाय। अउ धोरइ ला घलो बलाए जाय।''

राजा के आग्या ले किसान के बेटा अउ धोरइ ल राज–दरबार म पेस करे गिस। राजा हर किसान के बेटा ल कहिस, यदि साँप अउ कउँवा ल तैं मारे हस त सबूत पेस कर। किसान के बेटा हर अपन गमछा म बाँधे साँप अउ कउँवा के मुड़ी ल राजा साहब के आगू म रख दिस। राजा हर अचरज म परगे। साँप अउ कउँवा ल धोरइ मारे हे कि ये किसान के बेटा! राजा हर बिचार कर के कहिस, ''मैं कइसे मानँव, साँप अउ कउँवा ल तैं मारे हस।'' किसान के बेटा हर कहिस, मोर करा एकर गवाही हे। ये कहिके अपन तुमड़ी ले केकरा ल निकाल के एक तरफ राजा के आगू म मढ़ा दिस त दूसर तरफ ठेंगा ल धर दिस। वोकर गवाही ल देख के सबो दरबारी मन के मुँहू ले हाँसी फूटगे।

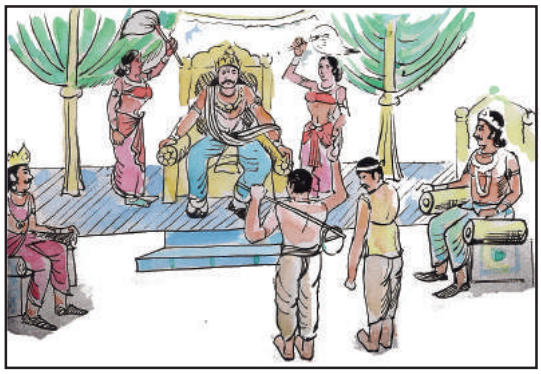

दरबारी मन ल हाँसत देख के केकरा हर सबो बात ल ओसरी–पारी बताए लागिस। केकरा के बात ल सुन के तो राजा के बिस्वास हर पक्का होगे। तब वोहर मंत्री ल कहिस, ''अब ये धोरइ बर का नियाव हे?'' मंत्री कहिस, ''धोरइ ल घलो अपन बात रखे के मउका दिए जाय।'' लेकिन धोरइ के मुँहू ले तो एको भाखा नइ फूटिस। वो का कही सकत हे? इहाँ तो दूध के दूध अउ पानी के पानी हो गे रहिस। धोरइ हर अपराधी कस मुड़ी गड़ियाये खड़े रहिस। त राजा सब बात ल बिन कहे समझगे। राजा हर कहिस, धोरइ ह हमर सँग धोखा करे हे। एकर सजा मिलना चाही। ये कहि के धोरइ ल जेल म धँधवा दिस अउ किसान के बेटा के सँग राजकुमारी के बिहाव कर दिस।

किसान के बेटा हर अब राजा के दमाँद बनके राजमहल म रहे लागिस। उहाँ सब सुख सुविधा होय के बाद वोकर मन ह उहाँ नइ लागत राहय। चोबीस घंटा बइठे–बइठे दिन हर घलो नइ पहाय। तब वोहर राजकुमारी ल कहिस, मोर ददा हर कहे रहिस, ''सदा मिहनत करके जिनगी बिताबे।'' ये बात सही आय, बिना मिहनत करे अनाज नइ खाना चाही। बिन मिहनत के भोजन खाना पाप बरोबर होथे। ये कहिके वोहर राजा के खेत म जाके काम–बूता करे लागिस।

किसान के बेटा ल खेत म काम करत देख के लोगन हाँसै। कतको मन तो वोकर खिल्ली उड़ाँय। ''हड़िया के मुँहू ल परई म ढाँकबे, मनखे के मुँहू म काला ढाँकबे।'' जे ठन मुँहू ते ठन बात। कोनो काहय, राजा के दमाँद होके मिहनत करथे, कतिक गुनिक मनखे हे। त कोनो काहय, मजूर के बेटा मजूरी नइ करही त अउ का करही। धीरे–धीरे ये बात राजा के कान म पहुँचगे।

राजा हर ओला दरबार म बला के कहिस, ''तैं हर अब किसान के बेटा नो हस, राजा के दमाँद आस। अब तोला ये तरह ले काम–बूता करना सोभा नइ देवय। परजा म बने बात नइ होवत हे।'' किसान के बेटा ह कहिस, ''महराज, मोला छीमा दूहू। काम करना कोनो अपराध नोहै। मैं अपन खेत म मिहनत करथँव। राजा के दमाँद होके जब मैं मिहनत करहूँ तब परजा के मन म मिहनत बर आदर के भाव जागही, अउ कोनो काम ल वोहर छोटे–बड़े नइ समझही। हमर राज म धन दिनदुनी रात चउगुनी बाढ़ही। जउन राज के राजा हर मिहनत करथे, ओ राज म कभू अकाल अउ भूखमरी नइ होवय।''

अपन दमाँद के बिचार ल सुन के राजा हर गदगद होगे। ओला अपन छाती ले लगा लिस। अब ओला बिस्वास होगे कि ये हर मिहनती के सँगे–सँग बिचारवान घलो हे। राजा हर दरबार म घोसना कर दिस, ''मोर इही दमाँद हर राज के उत्तराधिकारी होही।'' राजा के घोसना ल सुन के दरबार म उछाह छागे।

2. हिरन अउ कोलिहा (छत्तीसगढ़ी लोककथा)

एक बखत के बात आय। हिरन अउ कोलिहा पानी पीये बर जावत रहिन। कुँआ तीर जा के कोलिहा ह हिरन ले कहिस ''ये मितान! मैं हर पहिली खाल्हे डहर लटक के पानी पी लेथँव; पाछू तैं पानी पी लेबे।'' कोलिहा ह हिरन के पूछी ल धर के खाल्हे डहर लटक के पानी पीये लागिस। जब वो हर पानी पी डारिस तब हिरन के पारी आइस। जब कोलिहा हर हिरन के पूछी ल धरिस तब हिरन ह कुआँ डहर लटक के पानी पीये छपाक लागिस। आन देखिस न तान, कोलिहा हा हिरन ला कुआँ म ढकेल दिस। हिरन हर कुआँ म भदाक ले गिर गे। कुआँ ले थोरिक दुरिहा खेत म किसान मन बटुरा टोरत रहिन। कोलिहा हर किसान मन ला हूँत कराके बलाइस, अउ कहिस, ''एकठन हिरना हर ये कुआँ मा गिर गे हे।'' किसान मन कुआँ म गिरे हिरन ल अड़बड़ उदीम कर के बाहिर निकालिन। हिरन के तो परान निकल गे रहिस। ओला थोरिक दूरिहा म ले जा के नान–नान काटे लागिन। तब्भेच्च कोलिहा ह उँकर तीर म जाके कहिस, ''सँगवारी हो, एक भागा माँस महू ल नइ दुहू का?''

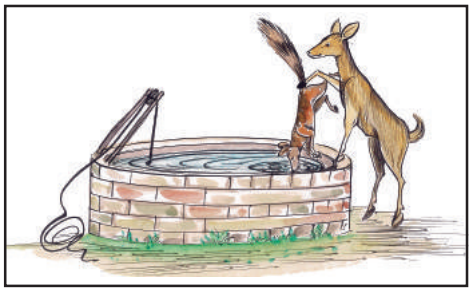

किसान मन कहिन, गजब मिहनत करके हमन हिरन ल कुआँ ले बाहिर निकाले हन, ये पाये के येमा पोगरी हिस्सा हमरे हे। कोलिहा हर कहिस, फेर हिरन के कुआँ म गिरे के खबर तो मैं हर दे हौं? वोकर ले का होथे, ''जे करे काम, ते खाये चाम।'' अइसे कहिके किसान मन इनकार कर दिन।

अब कोलिहा हा कहिस, ''ठीक हे भाई हो! जइसे तुँहर मरजी। तुमन मोला हिरन के माँस खाये बर नइ देना चाहौ त मत देवौ। फेर मोला नानकुन आगी तो दे दौ।''

किसान मन कोलिहा ल आगी दे दिन। कोलिहा हर आगी ल धरिस अउ किसान मन के बटुरा के खेत म फेंक दिस। बटुरा के खेत ह जरे लागिस। वोला देख के किसान मन अकबका गे। अउ आगी ल बुझाये बर खेत डहर दउँड़िन। जइसे किसान मन खेत डहर गइन कोलिहा हर हिरन के माँस ल पेट भर खाइस।

शब्दार्थ

एकेल्ला – अकेला; **डहर** – रास्ता; **सँगवारी** – साथी; **रद्दा** – रास्ता; **मढ़ा के** – रखकर; **अड़बड़** – बहुत; **तुमड़ी** – लौकी का सूखा खोल; **कटकटाए** – बहुत घना; **साँकुर** – सँकरा; **हाँका पारना** – मुनादी करना; **घमघमाए** – आच्छादित; **सुग्घर** – सुन्दर; **चिटिक बेरा** – थोड़ा समय; **रूख** – वृक्ष; **बासा** – निवास; **टोंटा** – गला; **मुड़ी** – सिर; **उछाह** – उत्साह; **धोरइ** – चरवाहा (एक तरह की जाति); **ओसरी–पारी** – एक के बाद एक, क्रमशः; **गुनिक** – गुणवान; **बिख** – विष, जहर; **कोलिहा** – सियार; **खाल्हे** – नीचे; **बटुरा** – मटर; **थोरिक** – थोड़ा; **तीर** – पास; **नानकुन** – छोटा–सा; **आगी** – आग; **तरास** – भय; **उदीम** – प्रयास।

अभ्यास

पाठ से

निर्देश : हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. किसान के बेटे को साथ ले चलने के लिए केकड़े ने क्या तर्क दिया?
2. केकड़ा और ठेंगा ने किसान के बेटे की रक्षा किस तरह की?
3. साँप और कौए के आतंक से पूरा राज्य किस तरह प्रभावित था?
4. किसान के बेटे ने परिश्रम के महत्त्व को किस तरह परिभाषित किया?
5. हिरण और कोलिहा ने कुएँ से पानी पीने के लिए कौन सी तरकीब सोची?
6. हिरण को कुएँ में धकेलने के पीछे कोलिहा का क्या उद्देश्य रहा होगा?
7. कोलिहा के द्वारा माँस माँगने पर किसानों ने क्या कहा?
8. धोरइ अपन बात ल काबर नइ रखिस?
9. कोलिहा हर बटुरा के खेत म आगी काबर लगा दिस?

पाठ से आगे

1. जनजाति समूह के व्यक्तियों में कौन–कौन सी विशेषताएँ होती है? बड़े–बुजुर्गों से चर्चा करके लिखिए।
2. छत्तीसगढ़ में लोककथा कहने के साथ–साथ लोकगीत भी गाए जाते हैं। किन्हीं पाँच लोकगीतों के नाम लिखकर एक–एक उदाहरण भी दीजिए।
3. ''जो कोई साँप और कौए को मारेगा, उससे मैं राजकुमारी का विवाह कराऊँगा।'' क्या राजा की यह घोषणा उचित थी? अपने विचार दीजिए।
4. पानी पीये बर हिरन हर कोलिहा के सँग दिस, फेर कोलिहा के पारी आए ले वोहर हिरन ल कुँआ म ढकेल दिस। कोलिहा के अइसन आचरन के बारे म अपन बिचार लिखौ।

C7DCAS

5. खेत की खड़ी फसल में आग लग जाने पर उसे बुझाने के कौन–कौन से तरीके हो सकते हैं? विस्तारपूर्वक लिखिए।

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित छत्तीसगढ़ी शब्दों को हिंदी में लिखिए?

   ओसरी–पारी, घटाटोप, नेकी–बदी, अधमरहा, घेंच, अचरज, ठट्ठा–दिल्लगी, डहर, हुरहा, मुड़ी, नजिक आदि।

2. अपने क्षेत्र में प्रचलित किन्हीं पाँच लोकोक्तियों का संग्रह करके उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. अव्यय शब्द– संस्कृत भाषा में कुछ अव्यय शब्द होते हैं, जिन्हें प्रयोग में लाते समय उनके मूल स्वरूप में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। ठीक उसी तरह छत्तीसगढ़ी भाषा में भी अव्यय शब्द होते हैं, जिनके रूप नहीं बदलते, जैसे– डहर, तब्भे, सेती, बर, कनि आदि। इसी तरह छत्तीसगढ़ी के अन्य अव्यय युक्त शब्दों को ढूँढकर उनके अर्थ भी लिखिए।

C7M8CF

4. पाठ में आए क्रिया शब्दों को लिखकर उनका हिंदी में अनुवाद कीजिए।

   जैसे : कहिस – कहा; खइस – खाया; होइस – हुआ।

योग्यता विस्तार

C7M4E3

1. आप अपने क्षेत्र में प्रचलित दो लोककथाओं को अपनी मातृभाषा में लिखिए।
2. हिंदी भाषा में लिखी गई किन्हीं दो लोककथाओं का अनुवाद अपनी मातृभाषा में कीजिए।
3. लोककथा किसे कहते हैं? यह लोकगीतों से किस प्रकार भिन्न होती है? शिक्षक से चर्चा कीजिए।

4. छत्तीसगढ़ क्षेत्र में अनेक लोकगाथाएँ गाई जाती हैं। कुछ लोकगाथाओं एवं उनके प्रसिद्ध गायकों के नाम लिखिए।

क्र. सं.	लोकगाथा का नाम	लोकगाथा गायक/गायिका
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		

5. अपने पुस्तकालय से लोककथाओं की पुस्तकें लेकर उनमें दी गई लोककथाओं को पढ़िए।